MAHANTH MAHADEVANAND MAHILA MAHAVIDYALAYA, ARA

ACTIVITY REPORT

Name of the Department: Department of History

Name of activity: National Seminar on 'Archeological and literary Study of Temples of Bihar'.

Level of activity: National Departmental/Institutional/State/National/International

Date of activity: 15-16th July 2022

Head of The department: Dr. Anupama

Convener of Seminar – Dr. Rajiv Kumar, Associate Professor, N.S.S. Co-coordinator, Dept. Of History, V.K.S.U

Name of Resource person/s: List of Resource Persons attached.

Number of teacher participated: 30 of M.M. Mahila College

Number of students and participants: 180

Fruitful Outcome of the activity:

Detailed report and outcome of the activity attached.

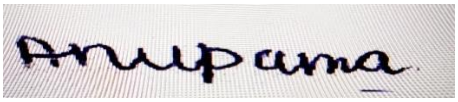

Signature

List of Resource Persons with Institutional Address

1.Keynote Address Chief Guest- Acharya Kishore Kunal, Mahavir Mandir Trust, Patna. Bihar.

2. Address by Special Guest – Dr. Balmukund Pandey, National Org. Secretary in Akhil Bhartiya Itihas Sanklan Yojna, New Delhi.

3. Address by Distinguished Speaker Prof. Baidyanath Labh, Vice Chancellor, Nava Nalanda Mahavira, Nalanda, Bihar.

4. Address by Distinguished Speaker Dr. Rajeev Ranjan, Professor, Dept. of History, College of Commerce, Arts and Sciences, Patna, Bihar.

5. Address by Pro- Vice Chancellor, Prof. (Dr.) C.S. Choudhury, V.K.S.U, Ara, Bihar.

6. Prof. Dr. Dhirendra Kumar Singh, Registrar, V.K. S. U, Ara, Bihar.

7. Dr. Sunita Sharma, Associate Professor, Dept. of History, B.D.College, PPU, Patna. Bihar.

8. Dr. Rama Kant Sharma, Associate Professor, Dept. of History, Ram Krishna Dwarka College, Patna.

9. Dr. Shivesh Kumar, Associate Professor, Dept. of History, B.R.A., Bihar University, Muzaffarpur, Bihar.

10. Dr. Urvashi Gautam, Assistant Professor, Dept. Of History, Ganga Devi Mahila Mahavidyalya, PPU, Patna, Bihar.

11. Dr. Md. Niyaz Hussain,Associate Professor, Department of History, Maharaja College, V.K.S.U, Ara, Bihar.

12. Dr. Vijya Lakshmi Associate Professor, Dept. of Home Science, M.M. Mahila Mahavidyala, V.K.S.U, Ara, Bihar.

13. Dr. Vandana Singh, Assistant Professor, Department of History, Rambriksh, Benipuri Mahila Mahavidyalaya, B.R.A, Bihar University, Muzaffarpur, Bihar.

14. Dr. Chintu, Assistant Professor, Head of Department Political Science, A.S.College Bikramganj, Rohtas Veer Kunwar Singh University, Bihar.

15. Prof. Piyush Kamal, PG. Department of History, Magadh University, Bodh Gaya. Bihar.

16. Dr. Vikas Singh, Archaeologist, Banaras Hindu University, Varanasi.

17. Dr. Parth Sarthi, Associate Professor, Dept. of History, Anugrah Memorial College, Bodh Gaya. Bihar.

18. Prof. Piyush Kamal, PG. Department of History, Magadh University, Bodh Gaya, Bihar.

19. Dr. Niraj Kumar, CCDC, V.K.S.U, Ara, Bihar.

MEDIA COVERAGE/PHOTOGRAPHS

epaper हिन्दुस्तान

Share | Copy url | Save | Font Size | D'load Image | Image | Text | Listen

बिहार के प्राचीन मंदिरों के किवदंतियों को संकलित करना जरूरी

आचार्य कुणाल

आरा, निज प्रतिनिधि। महंत महादेवानंद महिला महाविद्यालय और भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली की ओर से प्रायोजित व महिला कॉलेज इतिहास विभाग एवं इतिहास संकलन समिति, बिहार के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी की शुरुआत महिला कॉलेज सभागार में हुई। संगोष्ठी के विषय बिहार के मंदिरों का पुरातात्विक एवं साहित्यिक अध्ययन पर वक्ताओं ने अपनी बातों को रखा। उद्घाटन समारोह में विभिन्न विवि व अलग-अलग क्षेत्र के विद्वानों ने शिरकत किया।

मुख्य अतिथि श्री महावीर स्थान न्यास समिति के सचिव आचार्य किशोर कुणाल ने कहा कि यह संगोष्ठी ऐतिहासिक विमर्श, चिंतन एवं अनुशीलन का सारस्वत शिविर बने। उन्होंने बिहार की तीन विभूतियों कालिदास, मंडल मिश्र एवं वाल्मीकि और मौलिक शोध कार्य करने के लिए प्रेरित किया। बताया कि किस प्रकार बिहार में ही देश का सबसे प्राचीन मंदिर कैमूर का मुंडेश्वरी मंदिर स्थित है। इस पर उनका मौलिक शोध है। बिहार में कई मंदिर ऐसे हैं जिनका साहित्यिक एवं पुरातात्विक प्रमाण नहीं है। ऐसे में उनके साहित्यिक एवं पुरातात्विक प्रमाण खोजने की आवश्यकता है, उनसे संबंधित किवदंतियों को संकलित करने की आवश्यकता है।

अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के संगठन सचिव बालमुकुंद पांडे ने कहा कि भारतीय संस्कृति व स्थापना में हिंदू मंदिर का विशेष स्थान है। भारत में देवस्थल हिंदू समाज की चेतना का केंद्र रहे हैं। विश्व परिदृश्य में हिंदू -संस्कृति के अतिरिक्त ऐसी कोई संस्कृति नहीं जिसने इतनी अधिक मात्रा में देवालयों का निर्माण किया हो। विशिष्ट वक्ता के रूप में प्रो. बैद्यनाथ लाभ, कुलपति, नव नालंदा महाविहार ने कहा कि मंदिर संस्कृति के केंद्र हैं, जहां हमें मानसिक शांति प्राप्त होती है। वहां जाकर हमारी आत्मा का शुद्धिकरण होता है।

इतिहास विभाग, कॉलेज ऑफ कॉमर्स, ऑर्टस एण्ड साइंस, पटना के प्रो.राजीव रंजन ने कुछ क्षेत्रीय मंदिरों की चर्चा की और संबंधित प्रचलित कथाएं भी सुनाई। अध्यक्षता करते हुए वीकेएसयू के प्रति कुलपति प्रोफेसर सीएस चौधरी ने कहा कि अध्यात्म कभी विनाशकारी नहीं होता, हमेशा कल्याणकारी होता है। कुलसचिव प्रो धीरेंद्र कुमार सिंह ने कहा कि यह सामयिक विषय है। इस विषय पर गोष्ठी में जो चर्चा हो रही है यह बीज स्वरूप है और इसका फल भविष्य में अवश्य मिलेगा। स्वागत भाषण प्राचार्या डॉ. आभा सिंह ने दिया। उन्होंने मंदिरों के महत्व को रेखांकित करते हुए बताया कि प्राचीन काल से ही ये मंदिर शिक्षा के केंद्र के रूप में अपनी भूमिका निभाते रहे हैं। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. राजीव कुमार ने कहा समकालीन समय में बिहार के कई मंदिरों के बारे में लोगों को जानकारी नहीं है, इसीलिए बिहार का इतिहास मंदिरों के इतिहास के बिना अधूरा है। उन्होंने मंदिर को संस्कृति और धर्म प्रचार का संवाहक बताया।

स्मारिका का विमोचन करते आचार्य किशोर कुणाल, प्रोवीसी, कुलसचिव सहित अन्य अतिथि। ह

आरसी कुमारी ने मधुर आवाज में दीपमंत्र का गायन किया। महिला कॉलेज की छात्रा श्वेता, अंकिता, अंजलि, ज्योति और बंटी ने कुलगीत और स्वागत गान गाया। सम्माननीय अतिथियों का स्वागत मोमेंटो, बुके और चादर देकर किया गया। इस अवसर पर स्मारिका का विमोचन किया गया। संचालन डॉ. सुधा रंजनी और धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अनुपमा ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम में प्रो. मीना कुमारी, डॉ. शुभा सिन्हा डॉ.लतिका वर्मा, डॉ.फरीदा बानो, डॉ विजया लक्ष्मी, डॉ निधि सिंह, डॉ सादिया हबीब, डॉ सुप्रिया झा, डॉ स्मिता कुमारी, डॉ प्रिया कुमारी, स्नेहा शर्मा, डॉ मनोज कुमार,

देश का सबसे प्राचीन मंदिर है मुंडेश्वरी मंदिर : किशोर कुणाल

आज तक चलेगा बिहार के मंदिरों का पुरातात्विक व साहित्यिक अध्ययन विषयक संगोष्ठी

जास, आरा : श्री महावीर स्थान न्यास समिति के सचिव आचार्य किशोर कुणाल ने कहा कि कैमूर जिले का मुंडेश्वरी मंदिर देश का सबसे प्राचीन मंदिर है। उन्होंने कहा कि इस मंदिर के काल खण्ड को लेकर उनका शोध है। बिहार में करीब 4500 मंदिर है, जिसमें सिर्फ पांच सौ मंदिरों का ऐतिहासिक साक्ष्य है। शेष चार हजार मंदिरों का इतिहास किंवदंतियों पर आधारित है। उन्होंने प्रबुद्ध लोगों से अपील की कि जिनके पास मंदिर को लेकर जो किंवदंतियां उपलब्ध है, उसे उपलब्ध करावें, ताकि उसे साहित्यबद्ध किया जा सके। इससे आनेवाली पीढ़ियों को मंदिरों के अस्तित्व के संबंध में जानकारी मिलेगी। क्षेत्रीय इतिहास को संकलित करने की आवश्यकता पर जोर दिया।

आचार्य कुणाल शुक्रवार को एमएम महिला कालेज के इतिहास विभाग, इतिहास संकलन समिति और

एमएम महिला कालेज में राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन करते अतिथि • जागरण

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। दो दिवसीय संगोष्ठी कालेज के सभागार में 16 जुलाई तक चलेगा। बिहार के मंदिरों का पुरातात्विक व साहित्यिक अध्ययन विषयक संगोष्ठी का उद्घाटन बतौर आचार्य कुणाल, प्रधानाचार्य डा. आभा सिंह, संयोजक डा. राजीव कुमार व आगत अतिथि ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलित करके किया। उन्होंने कहा कि बिहार की तीन विभूतियों कालिदास, मंडल मिश्र एवं वाल्मीकि और मौलिक शोध कार्य करने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रति कुलपति प्रो. सीएस चौधरी ने की। इस मौके पर अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के संगठन सचिव श्री बालमुकुंद पांडे, कुलसचिव डा. धीरेंद्र कुमार सिंह ने विचार व्यक्त किया। कार्यक्रम के संयोजक डा. राजीव कुमार ने कहा समकालीन समय में बिहार के कई मंदिरों के बारे में लोगों को जानकारी नहीं है। इसीलिए बिहार का इतिहास मंदिरों के इतिहास के बिना अधूरा है। कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र का मंच संचालन डा. सुधा रंजनी और डा. अनुपमा ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस मौके पर प्रो. मीना कुमारी, डा. शुभा सिन्हा, डा. लतिका वर्मा, डा. फरीदा बानो, डा. विजया लक्ष्मी, डा. निधि सिंह, डा. सादिया हबीब, डा. सुप्रिया झा, डा. स्मिता कुमारी, डा. प्रिया कुमारी, स्नेहा शर्मा, डा.मनोज कुमार, डा. खुशबू कुमारी, डा.विजय श्री, डा. रश्मि सिन्हा आदि थे।

Dainik Bhaskar

मंदिरों का पुरातात्त्विक एवं साहित्यिक अध्ययन' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन आज से

पुस्तक विमोचन व मंचासीन अतिथि।

सभागार में उपस्थित शिक्षाविद्।

आरा (एसएनबी)। भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित तथा इतिहास विभाग, महंत महादेवानंद महिला महाविद्यालय, आरा एवं इतिहास संकलन समिति, बिहार के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 15 जुलाई से एम.एम. महिला कॉलेज में प्रारंभ हुआ, जिसका समापन 16 जुलाई को होगा। संगोष्ठी का विषय है 'बिहार के मंदिरों का पुरातात्विक एवं साहित्यिक अध्ययन'। उद्घाटन समारोह में विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा अलग-अलग क्षेत्र के विद्वानों ने शिरकत की।

संगोष्ठी के मुख्य अतिथि श्री महावीर स्थान न्यास समिति के सचिव आचार्य किशोर कुणाल ने कहा कि यह संगोष्ठी एक ऐतिहासिक विमर्श, चिंतन एवं अनुशीलन का सारस्वत शिविर बने। अन्वेषी विद्वत मनीषियों का परस्पर प्रयोग हवन-कुंड एवं पुनीत चिंतनशाला ही ना बने, अपितु भारतीय संस्कृति एवं आर्ष संस्कार की दिव्यता, आध्यात्मिक उन्नयन का बौद्धिक केंद्र बने, जहां से पूरी दुनिया को भारत की संस्कृति चेतना का नवीन नियमन उद्घोषित हो।

अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के संगठन सचिव बालमुकुंद पांडे जो कि विशेष अतिथि के रूप में मौजूद थे। उन्होंने बताया कि भारतीय संस्कृति व स्थापना में हिंदू मंदिर का विशेष स्थान है। भारत में देवस्थल हिंदू समाज की चेतना का केंद्र रहे है। ये देवालय लौकिक और पारलौकिक अर्थात् कर्मकांड व आध्यात्मिक आस्था के साथ-साथ सामाजिक, वैज्ञानिक चेतना के केंद्र भी है। विश्व परिदृश्य में हिंदू-संस्कृति के अतिरिक्त ऐसी कोई संस्कृति नही, जिसने इतनी अधिक मात्रा मे देवालयों का निर्माण किया हो। विशिष्ट वक्ता के रूप में प्रो. वैद्यनाथ लाभ, कुलपति, नवनालंदा महाविहार एवं प्रो. राजीव रंजन, इतिहास विभाग, कॉलेज ऑफ कॉमर्स, आर्ट्स एण्ड साइंस, पटना मौजूद थे। विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति प्रो. चौधरी एवं कुल सचिव प्रो. धीरेंद्र कुमार सिंह ने इस दो दिवसीय संगोष्ठी की सफलता हेतु शुभकामनाएं और बधाइयां दी। अध्यक्षता और स्वागत भाषण प्राचार्या डॉ. आभा सिंह ने किया। संयोजक डॉ. राजीव कुमार ने कहा समकालीन समय में बिहार के कई मंदिरों के बारे में लोगों को जानकारी नही है इसीलिए बिहार का इतिहास मंदिरों के इतिहास के बिना अधूरा है। कार्यक्रम के प्रारंभ में आरसी कुमारी ने मधुर आवाज में दीपमंत्र का गायन किया। तत्पश्चात् महिला कॉलेज की छात्राओं ने कुलगीत और स्वागत गान गाया। सम्माननीय अतिथियों का स्वागत मोमेंटो, बुके और चादर देकर किया गया।

इस अवसर पर स्मारिका का विमोचन किया गया, जिसमें बिहार के राज्यपाल, विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रतिकुलपति, कुलसचिव आदि की शुभकामना-पत्र और प्रतिभागियों के आलेख का शोध-सार प्रकाशित किया गया है। कार्यक्रम में महिला कॉलेज के सभी शिक्षक और शिक्षकेतर कर्मी उपस्थित थे। कार्यक्रम के उद्घाटनसत्र का मंच संचालन हिंदी की विभागाध्यक्ष डॉ. सुधा रंजनी ने किया। धन्यवाद ज्ञापन किया इतिहास विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ अनुपमा ने। प्रो. मीना कुमारी, डॉ. शुभा सिन्हा डॉ. लतिका वर्मा, डॉ. फरीदा बानो, डॉ. विजया लक्ष्मी, डॉ. निधि सिंह, डॉ. शशि भूषण देव, डॉ. चिन्टू आदि मौजूद थे।

मुंडेश्वरी माता का मंदिर सबसे प्राचीन : आचार्य कुणाल

राष्ट्रीय सागर संवाददाता

आरा। महंत महादेवानंद महिला महाविद्यालय, आरा में भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित तथा इतिहास विभाग, महंत महादेवानंद महिला महाविद्यालय, आरा एवं इतिहास संकलन समिति, बिहार के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन शुक्रवार से प्रारंभ हुआ। संगोष्ठी का विषय बिहार के मंदिरों का पुरातात्विक एवं साहित्यिक अध्ययन है। अतिथियों द्वारा कॉलेज के संस्थापक की प्रतिमा पर माल्यार्पण सामूहिक दीप प्रज्वलन छात्राओं द्वारा स्वागत और कुलदीप तथा सभी सम्मानित अतिथियों को बुके और अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया गया। संगोष्ठी के मुख्य अतिथि श्री महावीर मंदिर न्यास समिति के सचिव आचार्य किशोर कुणाल ने कहा कि यह संगोष्ठी एक ऐतिहासिक विमर्श, चिंतन एवं अनुशीलन का सारस्वत शिविर बने। उन्होंने बिहार की तीन विभूतियों कालिदास, मंडल मिश्र एवं वाल्मीकि की चर्चा की और मौलिक शोध कार्य करने के लिए प्रेरित किया। देश का सबसे प्राचीन मंदिर कैमूर का मुंडेश्वरी मंदिर प्रमाणिकता के साथ बताया जिस पर उनका मौलिक शोध है। बिहार में कई मंदिर ऐसे हैं जिन्का साहित्यिक एवं पुरातात्विक प्रमाण नहीं उनका प्रमाण खोजने की आवश्यकता है।

अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के संगठन सचिव बालमुकुंद पांडे जो कि विशेष अतिथि के रूप में मौजूद थे उन्होंने बताया कि भारतीय संस्कृति व स्थापना में हिंदू मंदिर का विशेष स्थान है। भारत में देवस्थल हिंदू समाज की चेतना का केंद्र रहे हैं। विशिष्ट वक्ता के रूप में प्रो. बैद्यनाथ लाभ, कुलपति नालंदा विश्वविद्यालय ने कहा कि मंदिर संस्कृति के केंद्र हैं। जहां हमे मानसिक शांति प्राप्त होती है। वहां जाकर हमारी आत्मा का शुद्धिकरण होता है।

भारत में देवस्थल हिंदू समाज की चेतना का केंद्र

➲ **बिहार के मंदिरों का पुरातात्विक एवं साहित्यिक अध्ययन विषय पर दो दिवसीय संगोष्ठी शुरू**

संवाददाता, आरा

पुस्तक का विमोचन करते अतिथि.

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित तथा इतिहास विभाग, महंत महादेवानंद महिला महाविद्यालय, आरा एवं इतिहास संकलन समिति, बिहार के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 15 जुलाई से एमएम महिला कॉलेज में प्रारंभ हुआ, जिसका समापन 16 जुलाई को होगा. संगोष्ठी का विषय है 'बिहार के मंदिरों का पुरातात्विक एवं साहित्यिक अध्ययन'. उद्घाटन समारोह में विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा अलग-अलग क्षेत्रों के विद्वानों ने शिरकत की. संगोष्ठी के मुख्य अतिथि श्री महावीर स्थान न्यास समिति के सचिव आचार्य किशोर कुणाल ने कहा कि यह संगोष्ठी एक ऐतिहासिक विमर्श, चिंतन एवं अनुशीलन का सारस्वत शिविर बने. अन्वेषी विद्वत मनीषियों का परस्पर प्रयोग हवन-कुंड एवं पुनीत चिंतनशाला ही ना बने. अपितु भारतीय संस्कृति एवं आर्ष संस्कार की दिव्यता, आध्यात्मिक उन्नयन का बौद्धिक केंद्र बने, जहां से पूरी दुनिया को भारत की संस्कृति चेतना का नवीन नियमन उद्घोषित हो. अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के संगठन सचिव बालमुकुंद पांडे जो कि विशेष अतिथि के रूप में मौजूद थे. उन्होंने बताया कि भारतीय संस्कृति व स्थापना में हिंदू मंदिर का विशेष स्थान है. भारत में देवस्थल हिंदू समाज की चेतना के केंद्र रहे हैं. ये देवालय लौकिक और पारलौकिक अर्थात कर्मकांड व आध्यात्मिक आस्था के साथ-साथ सामाजिक, वैज्ञानिक चेतना के केंद्र भी हैं. विश्व परिदृश्य में हिंदू-संस्कृति के अतिरिक्त ऐसी कोई संस्कृति नहीं, जिसने इतनी अधिक मात्रा में देवालयों का निर्माण किया हो. विशिष्ट वक्ता के रूप में प्रो बैद्यनाथ लाभ, कुलपति, नव नालंदा महाविहार एवं प्रो राजीव रंजन, इतिहास विभाग, कॉलेज ऑफ कॉमर्स, आर्ट्स एण्ड साइंस, पटना मौजूद थे. वीकेएसयू के प्रति कुलपति प्रोफेसर डॉ केसी चौधरी एवं कुल सचिव प्रो डॉ धीरेंद्र कुमार सिंह ने इस दो दिवसीय संगोष्ठी की सफलता हेतु शुभकामनाएं और बधाइयां दीं.

कार्यक्रम की अध्यक्षता और स्वागत भाषण प्राचार्या डॉ आभा सिंह ने किया. उन्होंने कहा कि सेमिनार के माध्यम से प्रतिभागी बिहार के मंदिरों का एक पुरातात्विक और साहित्यिक अध्ययन कर पाएंगे. उनके अनुसार प्राचीन काल से ही भारतीय मंदिर विभिन्न विचारों, लोगों, धर्मों, संस्कृतियों और वास्तुकला का केंद्र रहा है. संयोजक डॉ. राजीव कुमार ने कहा कि समकालीन समय में बिहार के कई मंदिरों के बारे में लोगों को जानकारी नहीं है. इसीलिए बिहार का इतिहास मंदिरों के इतिहास के बिना अधूरा है. दीप प्रज्वलन से कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ. जिसमें आरसी कुमारी ने मधुर आवाज में दीपमंत्र का गायन किया तत्पश्चात् महिला कॉलेज की छात्राओं ने कुलगीत और स्वागत गान गाया. सम्माननीय अतिथियों का स्वागत मोमेंटो, बूके और चादर देकर किया गया. इस अवसर पर स्मारिका का विमोचन किया गया. जिसमें बिहार के राज्यपाल, विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रतिकुलपति, कुलसचिव आदि की शुभकामना-पत्र और प्रतिभागियों के आलेख का शोध-सार प्रकाशित किया गया है. इस कार्यक्रम में महिला कॉलेज के सभी शिक्षक और शिक्षकेतर कर्मी उपस्थित थे. कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र का मंच संचालन हिंदी की विभागाध्यक्ष डॉ. सुधा रंजनी और धन्यवाद ज्ञापन इतिहास विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ अनुपमा ने किया. प्रो मीना कुमारी, डॉ शुभा सिन्हा, डॉ लतिका वर्मा, डॉ फरीदा बानो, डॉ विजया लक्ष्मी, डॉ निधि सिंह, डॉ शशि भूषण देव, डॉ चिंटू आदि मौजूद थे.

प्रभात खबर Sat, 16 July 2022
https://epaper.prabhatkhabar.com/c/69206194

Prabhat Khabar

Report of Inaugural Session

Indian History Research Council, New Delhi

Sponsored

National Seminar

On

"The Archaeological and Literary Study of the Temples of Bihar"

Organised by

Department of History, M.M.Mahila College, V.K.S.U., Ara, Bihar

In collaboration with

Ithihas Sankalan Samiti, Bihar

(15th-16th July, 2022)

Day 1 15th July 2022

Inaugural Session

On 15-16th of July 2022, a National Seminar was organised by the Department of History, Mahanth Mahadevanand Mahila Mahavidyalaya, Ara in collaboration with Ithihas Sankalan Samiti, Bihar on the topic "The Archaeological and Literary Study of the Temples of Bihar". It was sponsored by Indian History Research Council, New Delhi and oragnised in collaboration with Itihas Sanklan Samiti, Bihar. The venue was seminar hall of the college. It was attended by around 110 registered participants and invited guests. The inaugural event was from 11:00 am to 2:00 pm.

Dr. Sudha Ranjani Niketan, Assistant Professor and Head, Department of Hindi was anchor of the Inaugural Session. With short welcome of the dignitaries seated son the Dias, the event began with lightening of lamp by Principal of the college, Dr. Abha Singh, Chairperson of the Organizing Committee along with the Chief Guest Mr. Acharya Kishore Kunal, Mahavir Mandir Trust, Patna, Special Guest- Dr. Balmukund Pandey, National Org. Secretary in Akhil Bhartiya Ithihas Sanklan Yozna, Speaker Prof. Baidyanath Labh, Vice-Chancellor, Nava Nalanda Mahavira, Nalanda, Speaker Dr. Rajiv Ranjan, Professor, Dept. of History, College of Commerce, Arts and Sciences, Patna, Prof. (Dr) C.S.Choudhary, Pro.Vice-Chancellor, V.K.S.University, Ara, Prof. (Dr.) Dhirendra Kumar Singh, Registrar, V.K.S.U., Ara, Dr. Rajiv Kumar, Convener of the National

Seminar and Dr. Anupama as Co-Convener. It was followed by welcome song and the University Kulgeet by students.

Release of Souvenir by dignitaries

Dr. Abha Singh started her welcome speech with a beautiful poetic verse in Sanskrit. She expressed gratitude to all invited guests for taking out valuable time. She shared the message given by Honorable Vice-Chancellor Prof. Dr. K.C.Sinha for the success of the event. Later on, she introduced the audience to the immense contribution of Mr. Acharya in the field of studies on temple and religion in Bihar. She added that temples have been centers of learning and growth of culture. She also highlighted about gurukuls which were part of ancient history as mode of teaching practices in temples.

Dr. Rajiv Kumar the Convener of the seminar, in his speech gave a brief note of the two-day event. Dr. Rajiv focused on the topic of the seminar and the wide contributions of the speakers. He added

that it is necessary to undertake study of temples. For him it was studies were important to have a comprehensive knowledge of historical facts with special references to the archaeological techniques. In the context of temples in Bihar, he added that it will help in acknowledging the religious and cultural aspects. It also gives a positive energy if we are connected to the spiritual and religious activities. He talked about the Gupta-era and Post-Gupta era, Satpathbrahmins etc. He ended his note by saying that the study of temples is very essential for the moral and intellectual development of human being. The felicitation ceremony was followed by release of the souvenir which contained abstracts of the participants and speakers.

Souvenir Release – Convener and Co Converner

The Chief Guest Dr. Kishore Kunal , 'Acharya' delivered the keynote address. He said that the National Seminar would be a center for historical deliberation with constant study of practice and perception. He also talked about trio of intellectualism in Bihar- Kalidas, Mandal Mishra and Valmiki who were responsible for beginning of fundamental research practices such as carve out historical and archaeological facts. He highlighted in his lecture that that the oldest temple in India is situated in Kaimur District of Bihar. There is a need to find out about the lost temples of Bihar with the help of literary and archaeological evidences. He also talked about the temples during Kushan and Pal-era. He added that important temples and statues are situated in Bodh Gaya(Bihar).

In the address by the Special Guest- Dr. Balmukund Pandey, numerous information and archaeological facts about temples in Bihar was known. He said that the temples have been the cultural token of historical development. Indian spiritualism is the primary crux of eternal peace and sanctity. It helps to exclude negative waves. Most importantly, He stressed over the scientific study of temples in order to have a realistic idea. History follows a continuous research process that requires archaeological interpretation too. Hence, the overall study of temples in Bihar requires these methodologies to be connected to the cultural history of India.

The distinguished Speaker, Prof. Baidyanath Labh in his speech said that Hindu temples have a special place in establishing the Indian culture. According to him, they are not only essential for the spiritual belief, but also are an elegant place for social and scientific consciousness. Hence, the Hindu-culture has been an epitome of temple study. It is needed to preserve its sacredness and inviolability.

Another eminent speaker Dr. Rajiv Ranjan graced the event with his views on temples in Bihar with the study of literary and archaeological study. He said that more than belief, now the topic of temples has value of research. He talked about onagri Temples. He talked about memory and folk stories which is also corroborated by historical anthropologist Buchanan. The importance of mythic stories. He gave example of '*langot baba'* and shared his stories. He focused on importance of local stories and that there is a need to find such sources. He said that sources for such are available in form of official reports and gazetteers but we need to question their authenticity. According to him, the value of first hand story often got lost in translation by British writers and ethnographers, for example, name of villages etc. We need to question the sources itself and if they produced the right history. There is a parameter to judge knowledge based on reading best thinkers and colonial historians. We need to rethink looking at knowledge which is often biased by the colonial mindset. The renaming of syllabi also needs to be changed. The use of terminologies for that were set by the colonials needs to be revised. He argued that its essential that the idea of Bharat should be the first premise to understand our history. In Induction programme study of Indian culture is an important addition by Bihar government. He said that the Euro -centric view of history writing needs to be changed. He also pointed out the importance of "Itihas Diwas" and writing local history.

Another notable address was by Prof. Dr. Dhirendra Kumar Singh. He said that the topic of the Seminar has a contemporary relevance. He congratulated the Organizing Committee for undertaking such an endeavor. It would help to acknowledge the historical and archaeological study. He added the symbolic importance of Mahavir Mandir situated in Patna, Bihar. He ended his speech by saying that the outcome of the event shall bring fruitful results for the future.

The last address was given by Prof. Dr. C.S.Choudhary. He added that spiritualism is never destructive as some believe. It is actually welfare-oriented if it is taken as social token. He tried to connect it with scientific study. He focused over the importance of Mundeshwari Mandir situated in Bihar.

The Inaugural Session of the National Seminar ended with Vote of Thanks given by the Co-Convener, Dr. Anupama. She expressed her heartfelt thanks to ICHR, New Delhi for providing the grant for organizing the event successfully. She said that the topic of the National Seminar is new and fresh. It attempts to fill the gap which has been created due to lack of qualitative researches and due lack of interest. According to her, the studies offers to explore the cultural history of temples in Bihar and how temples add to the understanding of the state. She thanked all the dignitaries on and off the dias for their presence to grace the inaugural event. She also thanked all the participants across India who had contributed with their related research papers. The media persons were also acknowledged with gratitude for their constant support throughout the vent.

Session II

The session was anchored by Dr. Vijayshri, Assitant Professor, Department. Of Psychology. The first speaker for the session was Dr. Sunita Sharma, Associate Professor, B.D. College, Patliputra University.The title of her lecture was ‘Cosmic Glass Ceiling: Restricting Gender Space in Temples – The Institutionalised Form of Religion’. She said in her lecture that, women are slowly cutting through the thicket of conservatism that denies them equality in worship in many place (Leslie C. Orr). Liberty is tested at the individual level, for individual alone can constitute the

public in a republic. The ethical autonomy of women and the intrinsic value of womanhood needs to be asserted in the realm of spirituality. Therefore, breaching more religious barriers to achieve equality in the realm of religion should be a precursor to the call of women empowerment.

Any celebration of the demise of male hegemony over religion might be premature (Uma Chakravarti). Women are winning support in the court because there is sound legal ground against discrimination, more so if it comes in the form of institutional discrimination. In an attempt towards de- brahmanising history many scholars have brought out the resilience of a counter tradition by visiting some of the major site of resistance (Braj Ranjan Mani). The dominance of males particularly Brahmins in temples still exists (Kumkum Roy). The temples devoted to female deities in Bihar whether the iconic temple of Patandevi or Mundeshwari have no female priestesses but many other *shakti peeths (D.R.Patil)* strewn all over Bihar too have male dominance for carrying forward the rituals in the temples like acceptance of gifts, grants, perpetual lamps, thus the proprietorship of temples lies with the males (Anjali Verma). The cosmic glass ceiling remains despite the enervating presence of the female deity worshipped as *shakti (Kane).* The literary and epigraphical sources corroborate the invisibility of women in the structural as well as in the social formation of the society.

Second speaker of the session Dr. Ramakant sharma , Associate Professor of History, talked about Vishnupad temple in Gaya. He said that the discourse of temples is important as the theme of temples can be studied in form of various approaches. He pointed out that the city of Gaya has been mentioned in many rich sources. He talked about mythical stories such as reincarnation of Vishnu as Vaman and story of Bali. The pad in gaya that he was believed to be kept by Vishnu. He also talked about historical sources asvagosha.

Another speaker for the session Dr. Urvashi Gautam, Assistant Professor of history, spoke on Rajnagar (Madhubani): The City of Ruined Temples. In her presentation she talked about Rajnagar which is situated at a distance of 15 kms from Madhubani town and 230 kms north of Patna, the capital of Bihar. She mentioned that the structural remnants at Rajnagar includes residential buildings, revenue office and temples of Brahmanical deities. She further said that the Raj of Darbhanga established Rajnagar as one of his centers built in the 20th Century. During the period of King Rameshwar Singh several beautiful buildings and temples were constructed. The famous temples here are Durga Mandir, Kali Mandir, Kamakhya Mandir, Naulakha Mandir,

Ardhnarishwar Mandir,Shiv Mandir and Girija Mandir. All these temples were constructed by Maharaja Rameshwar Singh, after the death of his elder brother Maharaja Lakshmeshwar Singh. Her paper is an attempt to look at the history, architecture and cultural importance of the cluster of temples in Rajnagar along with the the three major inscriptions of the Kali temple. The inscriptions are in Devanagari Script written in Sanskrit. The inscriptions have been translated and edited by Bhavanath Jha, Editor, *Dharmayan*, Publication& Research Section, Mahavir Mandir Patna. This paper would like to draw attention of the researchers, scholars as well as the administrators to protect and popularize such places of historical, cultural and religious importance.

After these two sessions paper presentations of participants numbering 60-80 presented their papers in different paper presentations sessions. The papers were submitted beforehand and the abstracts were published in the souvenir. Selected papers were published in the proceedings of the conference.

Paper Presentations – Technical Session

Day II 16th July 2022

Day two of the seminar Plenary, Paper Presentations and Valedictory session was held in the College Library Hall from 10:30 am to 4 pm.

Plenary Session – First Speaker

Day 2 began with plenary session lectures in the first half and the first session was anchored by Dr. Khushbu Kumari of Political Science Department. The first speaker was Md. Dr. Niyaz Hussain Associate Professor of History, VKSU. In his lecture he spoke on the topic 'Glimpse of Surya temple: a historical perspective'. He talked about how sun is worshipped in various cultures, such as Hindu scriptures, Bible, and Babylon Civilization. He said that in the entire world sun is worshipped in various forms. In the ancient Mesopotamia we find mention of sun worship. That's why the onset of human civilization is connected with the significance of sun. for example, beginning of agriculture. It is also considered as source of life. It is a symbol of life. In the context of India, we find sources of sun worship since the pre historic times such as mural painting similar to that of sun (rays of sun in circle) in Chhattisgarh rock shelter we find evidence. In Vedic region savitiri and gaytri mantra is mentioned. We find evidence of upnishshds as well we find mention

of surya. Similarly, in Ramayana too we find mention of sun. Dr. Niyaz cited various ancient sources to emphasize value of sun worship in ancient history.

Second speaker Dr. Chintu talked about philosophical aspect of temples while taking historical and political science approaches. Temples are centers of learning, creativity and artistic expression. She focusses on relevance of Buddhist philosophy in contemporary period. As Lord Budhha 'what we see today is world order local, international, Burma, Afganistan, Russian invasion 'everywhere we see there is mentality of economic, cultural expansion through domination. For example, in Sri Lanka change of political power. Buddhist philosophy says that death is the ultimate result. So, there is no need for power politics and one needs to live well. There are four noble truths according to Buddha. We need to change the way we live and introspection is important.

Next speaker Dr. Vandana Singh presentation was focussed on Mujjafarpur's chaturbhuj : a historical tradition. Many historical temples were mentioned for example baba garibnath mandir etc. Turki Village small idol was worshipped. A mythical story was shared of a priest having a dream and being asked by the shiv idol to establish it somewhere. Another person having dream that he was asked by god to build bhairav mandir. This chaturbhuj mandir is ancient. The social changes had an impact on the sanctity of chaturbhuj temple as a red light area was build. It's a contradiction that because of the social space the chaturbhuj mandir has not got the much needed reverence. In post gupta period there was a land grant given by state to build temple however, otherwise nagarik samaj people were able to build many temples. And this temple was built in the similar tradition. In this chuturbhuj shiv Vishnu idol which is popular. Everywhere else Vishnu idol is worshipped however in mujjafarpur this temple has lost relevance. She focussed on various attempts at revival of the temple.

Dr. Vijayalakshmi Associate Professor of Home Science was the next speaker and she focussed on the topic, 'Surya Temple'. She also spoke about relevance of sun in the everyday human live since the ancient times. She talked about most of the temples and how they were centres of learning and education. She cited a philosopher that in ancient times temples were centres of learning and schools for example in Patliputra. She gave example of Nalanda hostels how students

were admitted and were educated. Their working was social and they had a different teaching style. They were educated on ved, vedant and music, it was spiritual as well as cultural.

In a village she cited named ‘agrahar’ where pandit were found in abundance and they were given grants in form of land. The pandits gave their land and to be used for education. The land grants started from satvahnas time period. Taxila according to her was also an agrahar. She further focussed on how in western India many popular temples were found. In continuation with special speakers, paper presentations followed by participants.

Lunch : Day 2

In the valedictory session chief guest was Dr. Prof. Piyush Kamal sir Professor of History, Magadh University, Gaya. He said that there is a newness in the topic. That it will be a mile stone in the context of Indian historiography. One can use a study like this we can use it in form of source. Regional history can be created into a national history. Survey of temples will lead to many such history. In south India temples have been a life of public social life. Temples are centres of social life. History of peoples can be written by observing the social life. If we look at the methodology in this context the topic can be considered as a source. People’s history can be written by survey

of temples. He said that he doesn't believe in any particular ideology and he writes history there cannot be any history without a view point. It is not necessary to be a Marxist, leftist, nationalist to be a historian. 'My sources tell me to write, rather than any ideology' he said. He gave an example of colonial historians. According to him, colonial historical writing such as James mill or Vincent Aurther Smitt. They had a goal of domination over India so history writing was motivated by such political concern. There was a stereotype of oriental despotism which outlined that the State government was more despotic. Later historians also followed the colonial historical opinions such as Bipan Chandra etc. so they looked at history from a particular view point. That's why we need to look at new sources and write new history.

Felicitation of Chief Guest - Valedictory

Prof. Dr. Niraj Kumar, CCDC of Vir Kunwar Singh University, he congratulated Dr. Rajiv for organising such seminar. He talked about history of university and how such seminars are significant in improving the academic value of university especially in NAAC assessments.

Dr. Rajiv Kumar thanked everyone in the vote of thanks for everyone's contribution and time. This topic was eventual and was selected among many topics. It started in pre-covid times however the choice was to have an offline event. The topic was well appreciated by many.

The programme ended by singing the National Anthem.